Western Philosophy - Descartes

THEORY OF INNATE IDEA
जन्मजात प्रत्यय का सिद्धान्त

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

डेकार्ट को आधुनिक दर्शन जनक माना जाता है, यद्यपि आधुनिक दर्शन के बीज का अंकुरण पहले ही हो चुका था फिर भी आधुनिक दर्शन अपने वास्तविक रूप में डेकार्ट से ही प्रारम्भ होता है।

डेकार्ट के अनुसार जन्मजात प्रत्यय, वह प्रत्यय है जिसे मानव जन्म से ही अपनी बुद्धि में आवश्यक रूप में ग्रहण करता है।जन्मजात प्रत्यय ही ज्ञान का स्रोत है, इसमें समस्त ज्ञान बुद्धि अर्थात मनस में सन्निहित है।आत्मा (मनस)में यह शक्ति होती है कि अनुभव के क्षेत्र में उस जन्मजात ज्ञान को स्पष्ट कर दे।

डेकार्ट के अनुसार जिस तरह उदारता या कुछ बीमारियाँ जैसे गुर्दे की बीमारी, लकवा की बीमारी इत्यादि परिवार में जन्मजात होता है उसी तरह जन्मजात प्रत्यय भी हमें जन्म से प्राप्त होता है(Innate ideas are innate in the sense that we say that generosity is innate in certain families, while in others certain diseases like Gout)।ईश्वर का प्रत्यय, अमरता का प्रत्यय आदि को भी डेकार्ट ने जन्मजात माना है।

जन्मजात प्रत्यय असंदिग्ध तथा सार्वभौम होते हैं इनकी सत्यता पर कभी भी सन्देह नहीं किया जा सकता ।इंद्र- जन्य ज्ञान अर्थात इंद्रियों से प्राप्त किया जानेवाला ज्ञान में असन्दिग्धता तथा सार्वभौमिकता का अभाव पाया जाता है क्योंकि हमारी इंद्रियां विश्वसनीय नहीं है उनसे सदा हमें संदिग्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है जिसका प्रमाण भ्रम तथा विभ्रम है जैसे रस्सी को देखकर सर्प का ज्ञान होना ,उसी तरह गुलाब का फूल लाल है यह हमें चुक्षु इन्द्रिय से ज्ञान प्राप्त होता है किंतु संसार के सारे गुलाब के संदर्भ में हमारा ज्ञान सत्य नहीं कहला सकता क्योंकि हो सकता है कि गुलाब अन्य किसी रंग का भी हो जैसे - काला, गुलाबी और सफेद इत्यादि ।अतः इंद्रीय-जन्य ज्ञान में सारभौमिकत का अभाव पाया जाता है।

डेकार्ट एक बुद्धिवादी दार्शनिक है उनके अनुसार बुद्धि ही सत्य ज्ञान की प्राप्ति का सही साधन है क्योंकि इससे जो ज्ञान प्राप्त होता है वह निश्चित सारभौम और असन्दिग्ध होता

है डेकार्ट ने संशय प्रक्रिया के द्वारा आत्मा की असंगदिग्धता एवं सार्वभौमिकता को प्रमाणित किया है इसलिए डेकार्ट ने कहा की आत्मा के भांति ही ईश्वर का ज्ञान भी बौद्धिक ज्ञान है इसे हम अनुभूतियों से नहीं प्राप्त कर सकते। ईश्वर का प्रत्यय हमारे अंदर जन्मजात है, जन्मजात प्रत्यय के माध्यम से हम जो भी ज्ञान प्राप्त करते हैं वे प्रमाणिक होते हैं उन पर किसी प्रकार का संशय नहीं किया जा सकता क्योंकि जन्मजात प्रत्ययों का निर्माता स्वयं ईश्वर है जो सत्य प्रिय एवं दयालु है इसलिए वह कभी भी हमें मिथ्या ज्ञान नहीं दे सकता। अतः इस पर किसी प्रकार का संशय नहीं किया जा सकता, यह एक प्रमाणिक ज्ञान है ।

प्रत्यय को अमूर्त कहा गया है ।डेकार्ट ने जन्मजात प्रत्ययों को चेतना में निहित माना है और चेतना जो मन का मौलिक धर्म है निराकार एवं अमूर्त होती है ।अतः जन्मजात प्रत्यय भी अमूर्त ही होंगे ।

जन्मजात प्रत्येक के अतिरिक्त भी डेकार्ट ने दो प्रत्ययों की कल्पना की है - अर्जित प्रत्यय और काल्पनिक प्रत्यय ।अर्जित प्रत्यय की उत्पत्ति बाह्य जगत की अनुभूतियों से होती है अर्थात अर्जित प्रत्यय वे हैं जिनकी प्राप्ति हमें वस्तु जगत से होती है जब हमारी इंद्रियों का संपर्क बाह्य जगत से होता है तब हम विभिन्न संवेदना के द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर जिस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं वही अर्जित प्रत्यय है अर्जित प्रत्यय जन्मजात प्रत्यय से भिन्न होता है यह एक अपूर्ण ज्ञान है क्योंकि इसका आधार हमारी अनुभूतियाँ हैं ।काल्पनिक ज्ञान कल्पना प्रसूत जिन्हें हम कल्पना शक्ति के आधार पर निर्मित करते हैं परंतु उनके सदृश्य वस्तु जगत में वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता जैसे आकाश कुसुम या बंध्या माता ।